कँवल ताल

जनक राज 'कँवल'

कँवल ताल

(कविता सँग्रह)

जनक राज "कँवल"

दिलबरजानी पबलीकेशनज़ गुरदासपुर

पुस्तक : कँवल ताल

लेखक : जनक राज 'कँवल'

प्रकाशक : दिलवरजानी पबलीकेशनज़
1–लाईब्रेरी रोड, गुरदासपुर-143521

प्रैस : शांत प्रिंटिंग प्रैस,
6–जसपाल नगर, सुलतानविंड रोड, अमृतसर।

संयोजक : सर्व श्री पूर्ण चन्द आसिम
और
आर० नीलम

मुल्य : 80 रुपये

पंचांग : अक्तूबर 1994

समर्पण

हिन्दी जगत

के

उर्दू प्रेमियों के नाम

परिचय

श्री जनक राज ''कँवल'' का व्यक्तित्व अथवा साहित्यक पक्ष किसी परिचय का मुहताज नहीं वह मूलत : उर्दू के शायर हैं तथा पाठकवृन्द के आग्रह को देखते हुए उनकी शायरी के कविता सँग्रह देवनागरी तथा गुरमुखी में लिप्यान्तर होकर पाठक जगत तक पहुँच चुके हैं। कँवल ने अब तक साहित्य क्षेत्र को 'जय हिन्द' (उर्दू) 'रक्स-ए-आवाज़'(उर्दू) 'आबशार' (उर्दू) 'निर्झर' (देवनागरी) तथा 'आबशार' (गुरमुखी) द्वारा आलोकित किया है। अब उर्दू कविता से प्रभावित तथा सुरुचि रखने वाले मान्य पाठकों को उनका नया उर्दू मौलिक देवनागरी में लिप्यान्तरित कविता सँग्रह ''कँवल ताल'' समर्पित है।

''कँवल'' की ग़ज़लों तथा नज़्मों को उद्‌यीमान तथा सुस्थापित स्वरकारों ने संगीत में लयबद्ध करके श्रोताओं की वाह वाह लूटी है। पँजाब के महान व्यँगकार सव. सरदार सिंह 'पागल' ने भी कँवल के कई शेअ़र अपने लेखों में उध्दृत किए हैं। कँवल अपनी कविता का माधुर्य दूर दर्शन अथवा मूशाइरों द्वारा भी बखेरते रहते हैं।

कँवल को कविता क्षेत्र में उतारने का श्रेय सव. मौलाना लतीफ़ अनवर को है।. जिनकी शागिरदी से आप की पारखी दृष्टि और भी पैनी हो गई। आप का मनन, चिन्तन तथा अध्ययन आपकी

कविता के निखार को चार चान्द लगाता है। क़ाल, स्थान और वस्तु के सन्दर्भ में आपकी प्रस्तुति अद्वितीय है तथा उर्दू, फ़ारसी का पिंगल ज्ञान उसमें अपनी चाशनी घोलने में सशक्त बन पड़ा है।

कँवल की कविता स्वभाविक, सुव्यवस्थित तथा सुपररिचित है। यह एक ऐसी नियँत्रित नदी है जिसकी बाढ़ दिखाई तो नहीं देती परन्तु जिसका प्रभाव पाठक के मन और मस्तिषक को उद्वेलित किए बिना नहीं छोड़ता।

'कँवल' आशावादी कवि है। अपने हृदय की गहराइयों से वह पलायनवाद का सर्मथक नहीं इसके यहां हर समस्या का समाधान है। वह केवल क्षेत्र बदल कर समस्या का हल ढूँढ निकालता है। वह सत्यम शिवम् सुन्दरम् का प्रतिपादन करता है। जीवन की घुटन जब उसे निह्वल करती है तो वह प्रकृति के सामीप्य के लिए ललायित हो उठता है अथवा बच्चों की किलकारियों से आह्लादित होता है। वह अजनबी धरती पर भी अपने स्नेह तथा निश्छल बौध को अभिव्यक्ति करने से नहीं चूकता। जब उन्हे रूस यात्रा के दौरान एक सभा को सम्बोधन करने का सौभाग्य प्राप्त होता है तो उनका अपनी भाषा में लिखा निबन्ध आतिथ्यकार देश में बार २ तालियों की गड़गड़ाहट में भूरि भूरि प्रशँसा समेटता है।

'कँवल' रूस, नेपाल और पाकिस्तान की यात्रा कर चुका है तथा अपनी ग़ज़लों और नज़्मों की मुगन्धि उन देशों के वातावरण में बखेर चुका है।

कँवल ऐसा सिन्दबाद है जो अपने आवरण से निकल कर अज्ञात जज़ीरों की धरती नापता फिरता है। 'लेबल' में नाम करण की रूढ़िवादता के उपक्रम को झेलना अक्षम्य समझता है। और ताश

के दोनों भागों में ग्रायु के बावन पत्तों को समाज में बांट कर स्वयं शेष बचे जोकर से जीवन की क्षण भँगुरता के विषय में बतियाता रह जाता है ।

इस नऐ कविता सँग्रह "कँवले ताल" को लिप्यान्तर करते हुए सुखद ग्राभास तथा ग्रनुभवों के साथ पाठकों को समर्पण करते हुए ग्राशा चाहता हूँ कि वह स्वंय 'कँवले ताल' की सामग्री से भाव विभोर हों ।

"ग्रार० नीलम"
196/14 माई के तालाब के पीछे
नई ग्राबादी, गुरदासपुर-143521

मेरे .ख्याल में

शायरी के मुतल्लिक सादा सा एक .ख्याल यह भी है कि मज़ाक़-ए-सलीम (Sensitivity) का जौहर (Essence) शायरी है या कहिये कि शायरी का जौहर मज़ाक़-ए-सलीस है। इसी शंत के साथ मेरे अपने नज़दीक अच्छे शअ़र की तारीफ़ यह भी है कि वह पढ़ने या सुनने वाले का ध्यान अपनी जानिब खींचने और दिल में उतर जाने की सलाहिय्यत (Capability) रखता हो। जनाब जनक राज 'कँवल' की शायरी सुनने और पढ़ने का शौक मुझे एक अर्से से है और मैं यह कह सकता हूँ कि उनका कलाम इस कसौटी पर उतरता है। उन की शायरी में जिन्दगी और महब्बत का तसव्वुर बहुत ही सादा, पाकीज़ा और ख़ूबसूरत है। उन की सोच का ताना बाना जमालियाती (Aesthetic) भी है और फ़िक्री (Intelectual) भी। शायरी में मज़ाक-ए-सलीम ही उनका राहनुमा हैं। उनके अशआर उनके जज्बात की तर्जमानी करते हैं वह अगर रवायत प्रस्त नहीं तो रवायत पसन्द ज़रूर हैं। शायरी के अपने लम्बे सफ़र में उन्होंने भी तरक्क़ी पसन्द तहरीक का असर तो कबूल किया मगर महज़ ज़ायके की तबदीली के तौर पर।

मेरे .ख्याल में उनकी शायरी में किसी ख़ास नज़रिया-ए-फ़िक्र की तलाश बेसुध है। उनके तख़लीकी अमल की बुनियाद अकसर-ओ-बेशतर वक्ती जज्बा ही होता है। इज़हारे-ए-बयान में सादगी और सलासत उन का ख़ासा है। वह बहुत सोच समझ कर शअ़र कहते हैं और ख़ूब २ कहते हैं। मैं समझता हूँ कि वह बहुत अच्छे शायर हैं।

"अल्लाह करे हुस्न-ए-रकम और ज्यादा"

पूर्ण चन्द "आसिम"

14 अक्तूबर 1994

गुरदासपुर-143521

?

ग़ज़लीयात

तेरी खुशबू, तेरी रँगत, तेरी लय,
जिस्म तेरा हर तर्फ़ विखरा हुआ ।

"कँवल"

०

दुनिया की ज़वानी है कि यह तुम ने कहा है,
अल्लाह करे झूठ हो जो हम ने सुना है।

ऐसे भी शब-ए-ग़म[1] में तुझे याद किया है,
अश्कों की जगह आँखों से जब ख़ून बहा है।

जो शख़्स मुझे आईना से झांक रहा है,
मैं ने तो कई बार इसे क़त्ल किया है।

काण्टे ही फ़क़त अपना मुक़द्दर हैं चमन में,
हर बर्ग-ए-गुले-तर[2] पे तेरा नाम लिखा है।

हम बैठें हैं माज़ी[3] के शबिस्तान[4] में तन्हा,
यादों के झरोकों से कोई झांक रहा है ।

तुम जिस को जला कर अभी आए हो चिता में,
वह शख्स[5] तो बुत बन के मेरे आगे खड़ा है ।

शबनम सी "कँवल" पलकों पे क्यों तैर गई है,
जिस वक्त सर-ए-शाख़[6] कोई फूल खिला है ।

---

1 दुख की रात 2 ताज़ा फूल पत्तीं 3 भूत काल
4. शयन कक्ष 5 आदमी 6. टहनी पर

०

जब भी याद आए हैं वअ़दे महरबानों के,
नाम ही बदल डाले हम ने सब फ़सानों के ।

जिन से हम को भरमाया आपने महब्बत में,
लफ़ज़ लफ़ज़ याद आए हम को उन बहानों के ।

ज़िहन के तसव्वुरात उन से ज़ख़्म ज़ख़्म हैं,
तीर जो ख़ता' हुए आप की कमानों के ।

शिँगरफ़ी बदन लिए नीलगूँ लिबास में,
चाँद जैसे लगते हैं आप आसमानों के ।

दोसती के दौर[3] में इन पे जो गुज़र गई,
हाल कह रहे हैं सब चिहरे बेज़ुबानों के ।

जब शबाब-ओ-हुस्न[4] पर रंग का ज़माना था ।
कितने प्यारे लोग थे हाय, उन ज़मानों के ।

---

1. निशने से चूक गए 2. नीला 3. काल
4. यौवन

○

जिस के ग़म में ढीली हो गईं तन और मन की चूलें,
उस ज़ालिम की कौन सी बातें याद करें क्या भूलें।

हाय वह लम्हे जब हम दोनों प्यार का झूला झूलें,
धरती ही पर बैठे बैठे आसमान को छूलें।

तुम बिन अब तो अपना जीवन यूँ लगता है जैसे,
यादों के सुनसान मरूस्थल, आन्धी, रेत, बबूलें।

यार हमारे जाने क्या क्या सोच रहे हैं दिल में,
या अल्लाह, ये यार हमारे सदा फलें और फूलें।

इस मंज़िल पे हम पहुंचे हैं जिन राहों से हो कर
उन राहों में फैली हुई हैं अब तक ग़म की धूलें।

तरह तरह की अफ़वाहें हैं शहर में तेरी बाबत,
कौन सी बात को रद्द करें हम कौन सी बात क़बूलें।

○

एक गज़ कपड़े का टुकड़ा ले के लहरा दीजिए,
जितनी भेड़ों के गले फिर चाहे कटवा दीजीए ।

शहर में पहले कोई अफ़वाह फैला दीजिए,
फिर जिसे चाहे उसे सूली पे लटका दीजिए ।

शम्म-ए-दिल[1] बुझने को है इसको सँभाला[2] दीजिए,
अपने आँसू पूँछ कर हम को दिलासा दीजिए ।

यह असूल-ए-दोसती है ज़िंदगी की दौड़ में,
हम सफ़र गिर जाए तो उसको सहारा दीजिए,

चान्द छुप जाता है जैसे बादलों की ग्रोट में,
इस ग्रदा से फिर ज़रा ज़ुल्फ़ों को झटका दीजिए।

हक़ को हक़ बातिल[3] को बातिल ही कहेंगे ग्रहल-ए-दिल[4]
ग्राप चाहे इन को दीवारों में चुनवा दीजिए।

उस लब-ग्रो-ग्रारिज़ के क़िस्से छेड़ कर ऐ दोसतो,
रंग-ग्रो-बू-ए-.हुस्न से महफ़िल को महका दीजिए।

झूटी क़समें मेरे सर की ग्रौर वग्रदे ग्राप के,
फिर उसी मग्रसूमियत से मुझ को धोका दीजिए।

उठ गए यारान-ए-महफिल जीत क्या, ग्रब हार क्या,
यह बिसात-ए-ज़िन्दगी[6] बहतर है उठवा दीजिए।

---

1. हृदय दीप 2. सहारा 3. झूठ 4 दिल वाले
5. ग्रोषृ ग्रौर कपोल 6. शतरंज पट

o

इक पल भी जो बैठा हूँ, तनहाई की छाग्रों में।
जलने लगा दिल अपना, यादों की चिताग्रों में।

यूँ विजली चमकती है, घन घोर घटाग्रों में।
जूँ गंगा की धारें हों, शिव जी की जटाग्रों में।

घर में न तुम्हें पा कर, वह लौट गया होगा
तुम जिस की समाधि में, बैठे हो गुफ़ाग्रों में।

कल तक जिसे जीने का, हक़ भी न मुयस्सर[1] था
ग्राज उसके वहुत चर्चे, हैं राज सभाग्रों में।

तहज़ीब-ओ-तमद्दुन[2] की, अज़मत[3] जो बढ़ाते हैं
वह लोग नहीं मिलते, अब शहर या गाओं में।

फ़िरदौस-ए-तसव्वुर में, कुछ फूल से चिहरों ने
फैला दी हैं ख़ुशबूएँ, हर सिमत फ़ज़ाओं में।

जिन तक नहीं पहुँचा था, यह दस्त-ए-जनूँ अपना
अटकी है निगाह अब तक, उन शोख़ क़बाओं[5] में।

इन्सां का लहू लाज़िम, है जिसकी इबादत[6] में।
ऐसा भी ख़ुदा होगा, इन्सां के ख़ुदाओं में।

है एक पिता सब का, सब उसके ही बालक हैं
लिखने को यह लिख्खा है, सब धर्म कथाओं में।

जीता है, न मरता है, हँसता है, न रोता है
एहसास की बेड़ी है, जिस शख़्स के पाओं में।

---

1. प्राप्त
2. सभ्यता
3. महानता
4. सर्वंग
5. चोली
6. पूजा

०

यारो राम दुहाई है।
हुस्न वड़ा हरजाई है।

जिस ने प्रीत निभाई है।
मुक्ति उसने पाई है।

बन ठन कर जो बैठे हो,
किस की शामत आई है।

आज वह चँचल शोख़ नज़र,
शरमाई, शरमाई है।

दिल मेरा बहलाने को,
याद किसी की आई है।

आतिश-ए-ग़म[1] को भड़का कर
अपनी चिता जलाई है।

जब भी तुम से आँख लड़ी,
बिजली सी लहराई है।

मेरी तौबा की दुशमन,
यह तेरी अंगड़ाई है।

ज़िकर-ए-'कँवल' पर फ़रमाया
बेचारा सौदाई है।

---

1. दिल की आग

○

यह अहल-ए-दिल के लिए, सामरी का जादू हैं
बदन के रंग, अदाएं, सुख़न[2] की खुशबूएं।

यह कौन था जो बहारों के भेस में आकर
चुरा के ले गया सारे चमन की खुशबूएं।

बहुत मज़े हैं विलायत में यह बजा, लेकिन
कहां से लाएंगे गंग-ओ-जमन की खुशबूएं।

करीब इतना न बैठो कि आने लग जाएं
बदन से आपके मेरे बदन की खुशबूएं।

कुच्छ इस अदा से छिड़ा जिकर_ए-गुलरुखां[4] कल शब
वतन से दूर भी पहुंचीं वतन की खुशबूएं।

है शहर-ए-अमन, मगर हर मकां से आती है
लहू से लिथड़े हुए पैरहन[5] की खुशबूएं।

हुआ ज़माना 'कँवल' वह इधर से गुज़रा था
फ़ज़ा में आज भी हैं जिस गुलनदन[6] की खुशबूएं।

○

---

1. एक जादूगर 2. बात चीत 3. परदेस
4. फूल जैसे चेहरे वाले 5. लिबास 6. फूल बदन

o

न मसजिदों की है यह और न मँदिरों की बात
ख़लूस[1]-ओ-अम्न तो होती है मयकदों[2] की बात

हमेशा अक़्ल ने उलझाई है दिलों की बात
यह इन दिनों की नहीं, है जुगों जुगों की बात

अदब[3] से अब नहीं सुनता कोई बड़ों की बात
मेरे तुम्हारे नहीं, यह है सब घरों की बात

फ़ज़ा में उड़ने लगे ख़ाब तितलियां बन कर
चली है बज़म में जिस वक़्त गुलरुखों[4] की बात

उन्हीं पे फ़ख़्र[5] है, हम प्यार करने वालों को
सुना रहे हैं जो हंस हंस के आँसुओं की बात

झुलस रहे हैं हकायक[6] के रेगज़ारों में
कोई तो आ के करे हम से बादलों की बात

हमारे कान भी अब पक चुके हैं सुन सुन कर
"यह अहदे-ए-जौर-ओ[8]-सितम तो है कुछ दिनों की बात"

बुरा न मानो अगर तुम तो एक बात कहूँ
यहीं पे ख़त्म न कर दें महब्बतों की बात ?

झुका लें शर्म के मारे सर अपना राहज़न[9] भी
सुनाएँ हम जो उन्हें अपने रहबरों की बात

जड़ों से कट के ख़लाओं[10] में अब भी लटके हैं
न आई जिनकी समझ में हक़ीक़तों[11] की बात

ज़माना-साज़ बने, ना हवा का रुख़ देखा
ख़ुद अपनी करते हैं हम ना कि दूसरों की बात

न ग़मगुसार[12], न हमदर्द, ना कोई हम राज़
करें तो किस से करें हम यहां दिलों की बात

बचश्म-ए-नम[13] जो सुनी है अभी "कँवल" तुमने
वह दुशमनों की नहीं वह थी दोस्तों की बात

हमारे अश्क[14] "कँवल" जिन में जज़्ब[15] होते थे
हमे न याद दिलाओ उन आंचलों की बात

---

1. सहृदयता 2. मधुशालाएँ 3. सत्कार 4. सुन्दर
5. गर्व 6. तथ्य 7. मरुस्थल 8. अत्याचार का काल
9. लुटेरे 10. शून्य 11. तथ्यों 12. दुख बांटने वाले
13. भीगी आँखें 14. आंसू 15. सोखना

तीन शेअर

शराब ख़ाने में जो भी गलास ख़ाली है
हर एक रिंद[1] को, साक़ी[2] को, सब की गाली है

○

बुला के पास, ज़रा उसकी बात तो सुन लो
तुम्हारे दर[3] पे खड़ा कब से इक सवाली है

○

तुम्हारे साथ जो खिचवाई थी, वही[4] तस्वीर
बहुत विचार के बाद आज फाड़ डाली है

---

1. शराबी 2. मधुबाला 3. दरवाज़ा 4. वह ही

o

[1]वुसअ़त-ए-कौन-ओ-मकां, टूटे हुए पर देखूँ
पाँव देखूँ कभी अपने, कभी चादर देखूँ

वक्त के आईने में ज़ीसत[2] के तेवर देखूँ
तीर-ओ-तरशूल, कहीं बम कहीं ख़ँजर देखूँ

ज़िहन के पर्दे पे जब माज़ी[3] के मँज़र देखूँ
तिरी आंखें, तिरे गेसू, तेरा पैकर[4] देखूँ

जो समाया है मेरी रूह. में ख़ुशबू बन कर
काश मैं उसको कभी हाथ से छू कर देखूँ

जी में आता है किसी रोज़ तुम्हारे दर पर
इक फ़क़ीराना सदा करके मुक़द्दर देखूँ

ख़ौफ से सहमी हुई रात में मेरे दर पर
किस की दस्तक है, यह कौन आया है छुप कर देखूँ

दोस्त कहते हैं कि हम जी नहीं सकते तुझ बिन,
क्यों न इक दिन के लिए मैं ज़रा मर कर देखूँ।

दिल की बस्ती में "कँवल" झाँकता हूँ मैं जब भी,
यह तमाशा कि जो बाहर है, वह अन्दर देखूँ।

---

1. जगत विस्तार 2. जीवन 3. भूतकाल 4. चेहरा

○

क्या हुआ जिस्म अगर दूर है इक दूजे से
मेरे सांसों में वसी है तेरे सांसों की महक।

जिहन[1] और रूह[2] को कर देती है जगमग जगमग
ग़म की अन्धेरी गूफ़ाओं में तेरी एक झलक।

अव भी तन्हाई के सन्नाटे में सुन लेता हूँ
दिल के नज़दीक तेरी याद के क़दमों की धनक।

ग़म-ए-दौरां[3] से मिली जब भी फ़ुर्सत
हम सँवारेंगे ग़म-ए-जानां[4] तेरी नोक पलक।

स्वर्ग ग्रौर नर्क के झगड़ों से उसे क्या लेना
जिस को लग जाए तेरे कूचे की इक वार ललक।

दीन ग्रौर इ़ल्म-ग्रो-सियासत[5] के घने जँगल में
रास्ता ढूँढ नहीं पाया बशर[6] ग्राज तलक।

शाम-ए-ग़म जब भी तसव्वुर में बुलाया तुझको
मान्द पड़ जाती रही चान्द सितारों की चमक।

---

1. मस्तिष्क 2. ग्रात्मा 3 दुनिया का दुख
4. प्यार का दुख 5. ज्ञान ग्रौर राजनीति 6. ग्रादमी

o

इधर उधर की चिन्ता छोड़ें अपने घरों की बात करें।
जिन की हो बुनियाद[1] महब्बत उन रिशतों की बात करें।

शबनम, फूल, सितारे, मौसम इन चारों की बात करें।
चान्द भी जिन से शरमाता है, उन प्यारों की बात करें।

आओ हम यह चुप्पी तोड़ें और दिलों की बात करें।
हँसते गाते जो बीते हैं, उन लम्हों की बात करें।

अ़हद-ए-जवानी[2] में जो देखे, उन ख़ाबों की बात करें।
होंटों की, रुख़सारों[3] की, या उन आंखों की बात करें।

मन्दिर और मसजिद के झगड़े, राम रहीम के झगड़े हैं
जो हैं रोटी और रोज़ी के, उन झगड़ों की बात करें।

ज़ुल्म[4]-ओ-तअस्सुब नफ़रत-ओ-कीना[5], सब है कार सियासत की
जो जीवन को ख़ुशियां देते, उन लोगों की बात करें।

हम से है हर कोई मुख़ातिब[6] और हम अपने आप में गुम
उस चिहरे का ध्यान हटे, तो फिर औरों की बात करें।

उन से कह दो, मँज़िल की जो बात है, मँज़िल पर होगी
काफ़िला जब तक राहों में है, उन राहों की बात करें।

जब भी हम उस फूल बदन का, ज़िक्र करें तो लाज़िम[7] है
आंखों को रँगों से भर लें, ख़ुशबूओं की बात करें।

जिन के दम से अपनी महफ़िल, लम्हा लम्हा जन्नत[8] है
बैठे हैं तो आओ यारो, उन यारों की बात करें।

उठते गिरते प्यार हमारा, 'कँवल' जहां परवान चढ़ा
उन रस्तों की, उन गलियों की, उन कूचों की बात करें।

---

1. नींव 2. यौवन काल 3. कपोलों
4. अत्याचार और कट्टर पन 5. ईर्ष्या 6. सम्बोधित
7. आवश्यक 8. स्वर्ग

○

तू लाख जाबर[1]-ओ-ज़ालिम सही खुदा तो नहीं।
हज़ार ऐब हैं, लेकिन मैं बे-वफ़ा तो नहीं।

यह रंज[2]-ओ-ग़म से शराबोर ज़िन्दगी अपनी।
किसी जनम के बुरे कर्म की सज़ा तो नहीं।

हज़ार मोड़ अगरचे लिए सिआसत ने
बहाव वक्त की रफ़तार का रुका तो नहीं।

हमेशा आस है क्यों सब को मुझ से नेकी की
मैं आदमी हूँ, फ़रिश्ता या देवता तो नहीं।

बढ़ा रहा हूँ तेरी सिमत[3] दोस्ती का हाथ
अगरचे दिल मेरा यह बात मानता तो नहीं।

प्याम[4] आया है उन का बहुत दिनों के बाद
कहीं वह मुझ से किसी बात पर ख़फ़ा तो नहीं।

क़रीब आओ ज़रा झूट मूट सच बोलें
ध्यान रखना कोई हम को देखता तो नहीं।

किसी को आस नहीं तुम से, देख लो आ कर
किसी के लब पे कोई हरफ़-ए-मुद्दआ[5] तो नहीं।

---

1. क्रूर 2. दुख 3. भीगा हुई 4. सन्देश 5. मांग

o

तेरा सलूक मेरे साथ कुछ भला तो नहीं।
बुरा सही मैं मगर इस कदर बुरा तो नहीं।

हद़ूद-ए-होश[1] से बाहर अभी से क्यों हैं लोग
रुख़-ए-हयात[2] से पर्दा अभी उठा तो नहीं।

मिला है जो भी मुझे आज मुस्करा के मिला
तेरी गली में कभी इस तरह हुआ तो नहीं।

हज़ार बार जलाया है हम ने रावन को
मगर वह आज भी मौजूद है जला तो नहीं।

वह कारसाज़[3] है तो यह बिगाड़ किस का है
सिवाए उस के यहां कोई दूसरा तो नहीं।

उठा रहे हैं यहां उँगलियां सभी मुझ पर
यह रास्ता तेरे घर का ही रास्ता तो नहीं।

मता-ए-जाँ[4] का रह-ए-इश्क़[5] में फ़ना[6] होना
यह जज़्ब-ए-दिल[7] की 'कँवल' कोई इन्तहा[8] तो नहीं।

○

---

1. होश की सीमा 2. जीवन का मुखड़ा 3. कर्ता पुरुष
4. जीवस सम्पदा 5. प्यार की राह में 6. मिट जाना
7. मनोभाव 8. अन्त

o

कोमल मधुर यह लहजा[1] तेरा रूह़ में उतरा जाए है
तेरे मुख से फूल से झड़ते कितने अच्छे लगते है

यह धरती है सब की धरती, जीवन ज्योति भी है एक
कोई नहीं है यहां पराया जो भी हैं वे अपने हैं

हमने जिन लोगों की ख़ातिर लाख दुआ़एँ माँगी थी
हम को पत्थर मारने वालों में वह सब से आगे हैं

जंगल के वह़शी भी जिन को देख लें 'गर तो काँप उठें
अपने शहर के गली, महल्लों में वह मँज़र[2] देखे हैं

हम हैं प्रेम पँथ के राही मस्त मलँग और बेपरवाह
मँज़िल कोई नहीं है अपनी बस रस्ते ही रस्ते हैं

आप इसे मानें, ना मानें, लेकिन सच्ची बात है यह
नीन्दें बेशक आपकी हैं पर इनमें ख़ाब हमारे हैं

ख़ुद को तू जनसेवक, नेता, देश भगत, जो चाहे कहे
यह भी सुन कि सामने तेरे आईने क्या कहते हैं

यह जिस शख़्स के भोलेपन का गुण गायन है महफ़िल में
उस ज़ालिम के जौर-ओ-सितम[3] के शहर में घर घर चर्चे हैं

जीवन के मन्दिर में अपने मन को डाँवाडोल न कर
इसमें तो आशा के दीपक पल पल जलते बुझते हैं

---

1. बोलने का ढंग 2. दृश्य 3. अत्याचार

○

वह उसका पहिले तो वअ़दा न करना
अगर करना तो फिर पूरा न करना

जो कुछ तन्हाई में मुझ से कहा है
किसी के सामने ऐसा न करना

बुलन्दी देख कर एवान-ए-ग़म' की
कभी कद अपने को छोटा न करना

गँवा लोगे भरम अपनी वफ़ा का
किसी से अब कभी वअ़दा न करना

वह उनका पूछना क्या ग़म है तुझ को
वह चुप रहना मेरा लब वा[2] ना करना

इसी अन्धे कूएँ में आ गिरोगे
मेरी आवाज़ का पीछा न करना

चले हो रूठ कर मुझ से तो सुन लो
मेरे ख़ाबों में भी आया न करना

मेरी तस्वीर सीने से लगा कर
अकेले बैठ कर रोया न करना

मैं तुम को भूल जाना चाहता हूँ
कभी अब मुझ को ख़त लिखा न करना

मेरे इस शहर में आकर किसी से
मेरे घर का पता पूछा न करना

मेरा कोई यहां वाक़िफ़ नहीं है
मुझे पहचान कर रुसवा[3] न करना

मेरी मजबूरीयों का ध्यान रखना
मेरी जानिब से दिल मैला न करना

सुना कर अपनी बरबादी के क़िस्से
"कँवल" यारों को शरमिन्दा ना करना

---

1. चिन्ता का महल 2. मुँह खोलना (बोलना)
3. बदनाम

o

हासिल-ए-ज़ीसत[1] इसी लम्हे को समझा जाए
किस लिए कल के इवज़[2] आज को बेचा जाए

दर्द की हद को ज़रा छू के तो देखा जाए
इस बहाने किसी हमदर्द को परखा जाए

मेरी ही शक्ल-ओ-शबाहत[3] का भरम होता है
तेरी सूरत को अगर ग़ौर से देखा जाए

जुर्म है क़ाबिल-ए-तअ़ज़ीर[4] यह माना लेकिन
बाइस-ए-जुर्म[5] है क्या ? यह भी तो देखा जाए

सोच के दायरे में सोच है हर नुक़ते पर
इसके बारे में भी ऐ दोसतो सोचा जाए

मेरी पलकों पे सितारे से लरज़[6] उठते हैं
शाख़ से जब भी किसी फूल को तोड़ा जाए

देखने लगता है मशकूक[7] निगाहों से मुझे
शहर में तेरा पता जिस से भी पूछा जाए

एक भी कौड़ी के जो शख़्स नहीं हैं वह भी
चाहते हैं कि उन्हें सोने में तोला जाए

हर ख़ताकार[8] को सूली पे चढ़ा दो बेशक
जिन पे इल्ज़ाम है कुछ उन से भी पूछा जाए

ग्राज कल ज़ोरों पे है दीन-ग्रो-धर्म का प्रचार
शहर में सिर से कफ़न बान्ध के निकला जाए

याद उसकी मेरी हस्ती[9] की नफ़ी[10] करती है
मसग्रला[11] यह है उसे किस तरह भूला जाए

जिस ख़ुदा को नहीं इनसां की दुग्रग्रों का लिहाज़
उस को ग्रब ग्रौर कहां तक भला पूजा जाए

○

---

1. जीवन निष्कर्ष 2. बदले में 3. रूप 4. दण्ड योग्य
5. दोष का कारण 6. काँप 7. शक भरी 8. दोषी
9. ग्रस्तित्व 10. नकारना 11. समस्या

o

तुम मेरे दिल की धड़कन में, मैं हूँ तुम्हारे ख़ाबों में
इक दूजे में ऐसे बसे हैं, ख़ुशबू जैसे फूलों में

तुम से मिलती जुलती सूरत, बन्द है मेरी पलकों में
अपनी आंखें डाल के देखो, ग़ौर से मेरी आंखों में

अपने देश की बाग डोर है, जिन लोगों के हाथों में
कितने घर बरबाद हुए हैं, आकर उनकी चालों में

प्यार की राह में, जिस पर, दो इक गाम[1] भी चलना मुश्किल था
कितनी दूर निकल आए हैं हम बातों ही बातों में

जाम उठा कर, मेरी जानिब[2] देख के यूँ न मुस्काओ
पहले ही बदनाम बहुत हूँ मैं तो अपने यारों में

इतनी देर के बाद मिले हो, जी करता है आज की रात
रोते रोते थक कर मैं सो जाऊँ तुम्हारी बाहों में

जिस पायल को पहन के उस दिन घर मेरे तुम आए थे
उसकी है झँकार अभी तक रक्सां[3] मेरे कानों में

देर हुई आंगन में हमने मिल कर जिन को बोया था
कितने मीठे फल आए हैं देखो आज उन पेड़ों में

अहल-ए-सियासत[4] की यह दुनिया मक्र-ओ-रया[5] की दुनिया है
जी करता है जा कर बैठें भोले भाले बच्चों में

रहने दो यह ज़िक्र-ए-तक़द्दुस[6] सब को है मालूम यहां
धर्म के नाम पे जो कुछ होता है इन धर्म स्थानों में

जिसके नीचे बैठ के हम ने दिल की मुरादें मांगी थीं
आज फिर आओ चल कर बैठें उस पीपल की छाओं में

तन्हाई में याद की चादर जब मैं ओढ़ के सोता हूँ
सन्नाटे की चीख़ को सुन कर डर जाता हूँ ख़ाबों में

हम दोनों का आपस में, सँजोग लिखा भी है कि नहीं
ढूँढ रहा हूँ एसी कोई रेखा अपने हाथों में

पत्थर मार मार के जिस के फल खाते थे बचपन में
आओ मुआफ़ी मांगें चल कर उस बेरी से गाओं में

जीवन क्या है ? मृत्यु क्या है ? ईश्वर क्या है ? मैं हूँ कौन ?
सारी उम्र गँवा दी हमने इन बेकार सवालों में

रँगीं रँगीं खुशबू खुशबू अपने दिल की दुनिया है
फूलों जैसे लोग बसा रखे हैं हमने यादों में

---

1. क़दम 2. ओर 3. नाच रहे हैं 4. राजनीतिज्ञ
5. छल कपट 6. पवित्र वर्णन

o

चिराग़[1]-ए-दर्द जलाओ स्कून[2]-ए-दिल के लिए
शराब तेज़ सी लाओ स्कून-ए-दिल के लिए

है जिस में मेरी तुम्हारी वफ़ाओं की ख़ुशबू
वह बात आगे बढ़ाओ स्कून-ए-दिल के लिए

दम-ए-विदा[3] भी मुझे इंतज़ार है जिसका
बुलाओ उस को बुलाओ स्कून-ए-दिल के लिए

शब-ए-वसाल[4] में जिस तमकिनत[5] से आए थे
उसी अदा से फिर आओ स्कून-ए-दिल के लिए

शऊर-ओ-होश-ओ-ख़िरद से जो ला-तअल्लुक़[6] था
वह लम्हा[7] ध्यान में लाओ स्कून-ए-दिल के लिए

यह ख़ामशी तो मिरी रूह चाट जाएगी
मचाओ, शोर मचाओ, स्कून-ए-दिल के लिए

मैं ख़ाब में भी तुम्हें बक़रार[8] रखूंगा
मेरा ख्याल भुलाओ स्कून-ए-दिल के लिए

मेरे लिए न दुआओ की भीख तुम मांगो
मेरी अना को बचाओ स्कून-ए-दिल के लिए

अभी तो आए हो और वह भी इतनी देर के बाद
अभी न जाओ, न जाओ स्कून-ए-दिल के लिए

बहुत दिनों से तबीय्यत उदास है अपनी
ग़ज़ल का शिअ़र सुनाओ स्कून-ए-दिल के लिए

है इज्त़राब-ए-मुजस्सम[9] मेरा वजूद[10] "कँवल"
मेरे क़रीब न आओ स्कून-ए-दिल के लिए

---

1. दीपक 2. दिल का चैन 3. बिछुड़ते समय
4. मिलन की रात 5. शान 6. सम्बन्ध रहित
7. पल 8. बेचैन 9. व्याकुलता की मूर्ति 10 अस्तित्व

पंजाबी ग़ज़ल

जीवन दे दुखां दे नाम
चुक्को अपना अपना जाम

सज्जन बिन दिन काह्दा दिन
उस बिन शाम वी काह्दी शाम

अज दी रमैन 'च सारे रावन
न कोई सीता न कोई राम

इश्क़ दी हार वी हुन्दी जित्त
परियां लै उड्डीयां गुलफ़ाम।

करे कराए आपे आप
सानू बदो वदी इलज़ाम

हर थां मची ए आपो धाप
जीकन लगी होवे लाम

कत्ल नहथे करन लई
ओ देखो फिरदे वरयाम

शअर ग़ज़ल दे कहन्दे सार
हुन्दा ए मैनू इलहाम[2]

---

1. खूबसूरत 2. परमात्मा की ओर से ज्ञान

o

तेरी हँसी 'गर मंसनूई थी
मैं भी झूठ मूठ था रोया ।।

इस सज धज में तेरी सूरत
मंदिर की मूरत हो गोया ।।[1]

तेरे ध्यान में मन रहता है
जागा, जागा, सोया सोया ।।

तेरे इसतिकबाल[2] को हम ने
अरमानो का हार परोया ।।

छेड़ के बीती बातें, यह दिल
तुझे रूला कर आप भी रोया ।।

जीवन के लेखे जोखे में
न कुछ पाया न कुछ खोया ।।

भारी भरकम बोझ दुखों का
किस हिम्मत से दिल ने ढोया ।।

प्यार की मौज ने दिल वालों को
साहिल[3] पर ही आन भिगोया ।।

हम ने दुख में, गंगा जल से
मन मंदिर का आन्गन धोया ।।

पार हुए जो कूद गए थे
ग्रौर हमें किश्ती ने डबोया ।।

"कँवल" को जब भी देखा हमने
बेसुध, बेसुध, खोया खोया ।।

---

1. यदि 2. स्वागत 3. किनारा

०

आज फिर आप का सामना हो गया
जिसका डर था वही हादसा हो गया

जो नज़र में बुरा था भला हो गया
दर्द इतना बढ़ा कि दवा हो गया

जूँही एहसास अपनी ख़ुदी का मिटा
आदमी ही मुजस्सम[1] ख़ुदा हो गया

तेरे हमराह जो शाद-ओ-आबाद[2] था
कितना वीरान वह रास्ता हो गया

उस ने पूछा कि क़ाइल[3] हुए या नहीं ?
मैं ने फ़ौरन कहा "हो गया, हो गया"

जिस किसी को बुरा कह दिया आप ने
लाख अच्छा सही वह बुरा हो गया

जो भी होना था आखिर वह हो कर रहा
अपना तुझ से जुदा रास्ता हो गया

०

दिल जो नाज़ां[4] था अपनी अना[5] पर बहुत
आप की इक नज़र पर फ़िदा हो गया

तेरे इश्वे[6] भी कुछ काम कर ना सके
तेरा तीर-ए-नज़र भी ख़ता हो गया

अक्ल-ओ-दानिश[7] अगर रायगां[8] हो गए
तेरी दीवानगी से भी क्या हो गया

कोई दीवार से लग के रोता रहा
कोई दामन छुड़ा कर जुदा हो गया

सब रसूमात-ए-उल्फ़त भुला कर यह दिल
आपका, आपका, आपका हो गया

आप क्या अपना दामन छुड़ा कर गए
कोई बेचारा बे आसरा हो गया

O

जिसने जोड़ा था दुनिया से हम को "कँवल"
मनक़ता आज वह सिलसिला हो गया

---

1 साकार 2. खुशी भरा 3. लाजवाब
4. स्वाभिमानी 5, अहंभाव 6. नख़रे
7. बुद्धि 8. व्यर्थ 9, प्यार की रस्में
10. कट गया

O

इक पल भी ओझल नहीं होते आँखों से
सरूओं[1] जैसे कद, वह चेहरे फूलों से ।।

फिसल गया वो लम्हा[2] मेरे हाथों से
जिस पर आस बंधी थी अपनी सदियों से ।।

अपने आंसू पूँछ के मैं ने जब देखा
भीगा था रूमाल तेरा भी अश्कों[3] से ।।

अस्ल[4] को अपने पा लेना दुशवार[5] नहीं
काश हमारे दिल हो जायें बच्चों से ।।

आप अगर वाकिफ़ हैं उन की खसलत[6] से
क्यों मिलते हैं आप फिर ऐसे लोगों से ॥

आप हमारी राहबरी[7] फरमाएंगे ?
आप ! जो खुद नावकिफ हैं उन रस्तों से

दिल को छू कर बीत गया है जो लम्हा ॥
बहुत कठिन है समझाना वह शब्दों से ॥

---

1. सरू के पेड़ 2. पल 3. आसूओं से
4. स्वभाव 5. मुशकिल 6. स्वभाव
7. मार्ग दर्शन

बात यह अब समझ में आई है
और इस में अटल सच्चाई है
दोस्तों दुशमनों के साथ "कँवल"
ज़िन्दगी चौमुखी लड़ाई है

○

कोई उम्मीद है न कोई ग्रास
है क़याम[1] ग्रपना ग्रपनी ज़ात के पास

ग्रब नहीं दर्द का कोई ग्रहसास
ज़िंदगी ग्रा गई है हम को रास

याद-ए-महबूब[2] तेरी उम्र दराज़
हिज्र[3] में भी वसाल[4] की बू बास

मिट गया लुत्फ़-ए-ज़िंदगी यकसर[5]
मौत का इस क़दर है खौफ-ग्रो-हरास[6]

इक हकीक़त की लाख तफसीरें[7]
किस पै ग्राखिर करे कोई विश्वास

जिस ने सुन ली है दिल की बात उसे
अक़्ल की बात आएगी कब रास

दिल का आराम, आँख की ठन्डक
संदली जिस्म पर स्याह लिबास

बात कोई तो है "कँवल" आख़िर
आप लगते हैं कुच्छ उदास उदास

---

1. डेरा 2. प्यारे की याद 3. जुदाई 4. मिलन
5. बिलकुल 6. डर 7. परिभाषाएँ

○

ज़िंदगी में मौत के मरहले[1] भी आएँगे
चल पड़े तो राह में हादसे भी आएँगे

आओ शौक़-ए-दीद[2] को और मोतबर करें
आँख से निहां[3] हैं जो, सामने भी आएँगे

दामन-ए-उम्मीद[4] को हाथ से न छोड़िये
दिन बुरे जो आए हैं दिन भले भी आएँगे

मन्तक़-ओ-दलील[5] की बात सुन के ज़िहन में
एतबार आएगा तो वसवसे[6] भी आएँगे

फूल जैसे लोगों की याद जब भी आएगी
साथ साथ रंग-ओ-बू के क़ाफ़िले भी आएँगे

---

1. पड़ाव 2. देखने का शौक 3. छुपे हुए
4. आशा का पल्लू 5. विवेक 6. सन्देह

6

दर्द से पुर मिरी कहानी है
उस सितमगर[1] की मिहरबानी है

हमनशीं[2] ! इस जहान-ए-फ़ानी[3] में
इक मुहब्बत ही ग़ैर फ़ानी[4] है

फ़िक्र दुनियां की और न उक़्बा[5] की
कितनी बेबाक यह जवानी है

अहल-ए-महफ़िल तवज्जा फ़रमाएं
मुख्तसर सी मेरी कहानी है

ब वफाई और आप से ? तौबा !
आप को कैसी बदगुमानी है

अपनी कहते न मेरी सुनते हो
आज क्या तुम ने दिल में ठानी है

शैख़ से ज़िद है, ऐ 'कँवल' वरना
दुख्तर-ए-रज़[6] तो कड़वा पानी है

---

1. ज़ालिम 2. साथी 3. नश्वर संसार
4. अमर 5. परलोक
6. अंगूर की बेटी, शराब

नज़्में

बातों बातों में बहुत दूर निकल आई हो
अब पलट जाना तुम्हारे लिए आसान नहीं।

"कँवल"

ताश

एक इक करके बांट चुका हूँ ताश के बावन पत्ते
मेरे पास बचा है ख़ाली पैकेट में इक जोकर
खेलने वाले खेल रहे • हैं रँग बरँगी चालें

–o–

मैं अपनी कुर्सी पर बैठा, छत की कड़ियां गिनता
सोच समन्दर की लहरों में ग़ोते खाता खाता
आ पहुँचा हूँ इस धरती पर जहां महकते गुलशन'
बैंठ गया हूँ धयान मगन हो, एक गुफ़ा के अन्दर

–o–

ख़ुशबूओं के फ़व्वारों में चांद से मुखड़े ले कर
नृत मुद्रा में फैल गई हैं आगे पीछे परियां
मेरे मन का विष्वा मित्र मृग छाला पर बैठा
क्या जाने किस ख़ौफ़ के कारण थर थर कांप रहा है

–o–

सोच समन्दर की लहरों ने फिर इक बार उभारा
जा पहुँचा मैं महाशून्य में जहां नहीं है कुछ भी
मैं भी हूँ या नहीं पता इसका भी नहीं कुछ चलेता
जीवन की इस मँज़िल का मैं नाम कौन सा रखूँ
ऐ मेरे हमदर्द दोसतो कुछ मुझ को बतलाओ
मेरे कोमल मन से यह दुख पर्बत ज़रा हटाओ
एक इक करके बांट चुका हूँ ताश के बावन पत्ते
मेरे पास बचा है खाली पैकेट में इक जोकर

1, उपवन

ताश II

एक इक कर के वांट चुका हूँ ताश के बावन पत्ते
मेरे पास बचा है ख़ाली पैकेट में इक जोकर

–o–

बीस बरस के बाद जों मैं ने ताश का पैक्ट खोला
उस में सोया जोकर जागा, रोया, हंसा, ग्रौर बोला
जीवन की उस मँज़िल का क्या ग्रता पता मिल पाया ?
जीवन ख़ुद ग्रपनी मँज़िल है, मैंने उसे वताया
ऊँचा नीचा, कड़वा मीठा, सुख दुख, धूप ग्रौर छाया
जीवन की महिमा है इस से, यह है जीवन माया
यह बहुरंगी वगिया ही जीवन का रूप सजाए
पल पल मरना, मर मर जीना, जीवन ग्रमर बनाए

ज्ञान ध्यान और नाम शब्द सब मन का गोरख धन्धा
शक्ति, भक्ति, मुक्ति, युक्ति, यह शब्दों का जाल
जीवन के सँगीत में केवल अनुभव है सुर-ताल

–o–

एक इक करके बांट चुका हूँ ताश के बावन पत्ते
मेरे पास बचा है ख़ाली पैकेट में इक जोकर

पाखण्ड

मैं हूँ आज के युग का मानव
मेरी इस तस्वीर को देखो
इस के आगे माथा टेको
मन चाहा वरदान मांग लो
जो मांगोगे सो पाओगे
तुम हरगिज़ मायूस न होगे

—o—

मैं हूँ आज के युग का मानव
मेरी इस तस्वीर को देखो
यह तो है सन्मान की भूखी
सच्ची झूठी शान की भूखी

—o—

तुम इस का सन्मान करो फिर
चाहे इस की जान मांग लो
तुम हरगिज़ मायूस न होगे
जो मागोगे सो पाओगे

—o—

मैं हूँ आज के युग का मानव
मेरी इस तस्वीर को देखो
इस का दिल है एक समुन्दर
भला बुरा सब इस के अन्दर
इस को कोई लालच दे कर
इसका धर्म ईमान मांग लो
तुम हरगिज़ मायूस न होगे
जो मांगोगे सो पाओगे

–o–

मैं हूँ आज़ के युग का मानव
मेरी इस तस्वीर को देखो
इस के है वहरूप अनेक
बद से बद और नेक से नेक
धर्म अर्धम का झांसा दे कर
इसके सब अरमान मांग लो
तुम हरगिज़ मायूस न होगे
जो मागो गे सो पाओ. गे

पड़ाव

रह-ए-हयात[1] का यह कौन सा पड़ाओ है ?
ठहर गया है जहां आके कारवां अपना

सिवाए धूल के कुछ भी नहीं हैं दामन में
अरूस-ए-फ़िक्र-ओ-नजर[2] आंसूओं के सरगम पर

न जाने कौन से नग़मे की तान में गुम है ?
भरोसा किस पे करें, किस से रास्ता पूछें ?

ख़ुद-आगही[3] के सिवा या ख़ुद-एतमादी[4] के
नहीं है कोई जिसे राहबर का रुतबा दें

---

1. जीवन पथ 2. विचार शृँखला 3. आत्मज्ञान
4. आत्म विश्वास

चक्कर

अनदेखे अनजाने रस्ते
अपने और बेगाने रस्ते

घूम घूम कर लौट आया हूँ
उसी डगर पर उसी मोड़ पर

जहां कभी मैं बिछड़ गया था
अपने आप से
रस्तों के इस चक्कर व्यूह में

हर रस्ते की कड़वी मीठी
याद का फनीअर

ज़हन मेरे की नस नस में
'बिस घोल रहा है

मैं इस काले नाग को नथ कर
कृष्ण कनहैय्या बनना चाहूँ
गेन्द कोई जमुना में फैंको

---

1. ज़हर

अर्जुन

मैं हूँ अपने युग का अर्जुन
जो जीवन संग्राम में रुक कर
दुविधा की तस्वीर बना है
ख़ुद अपनी ज़ँजीर बना है

तस्वीर

बैठे बैठे दिल बहलाएँ
आओ इक तस्वीर बनाएँ

जिस में मैं और तुम बैठे हों
इक पार्क में
बैंच के ऊपर

सामने नर्म और हरी घास पर
अपने प्यारे प्यारे बच्चे

फूलों पर बैठी हुई परियां
दौड़ दौड़ कर पकड़ रहे हों

गिरते उठते खेल रहे हों
अपने प्यारे प्यारे बच्चे

जिन को देख देख कर सोचें
जिन को सोच सोच कर देखें

चोर आंखों से
इक दूजे को
हम दोनों
इस बेंच पे बैठे

आओ इक तस्वीर बनाएँ
बैठे बैठे दिल बहलाएँ

राम धन

जिन्दगी का भी क्या भरोसा है ?

राम धन जो कि यार था अपना
बेपनाह[1] जिस से प्यार था अपना

जिसके बच्चे हमारे बच्चों के
दोस्त हैं और हमजमाअत[2] भी

सड़क के हादिसे में पिछले दिनों
स्वर्ग वास हो गया है बेचारा

आज उसके मकान के आगे
भीड़ सी लग रही है लोगों की

दोस्त अहबाव[3] आ रहे है सभी
शायद आज उसका तेरहवां होगा

मैं यहां सोच में हूँ डूबा हुआ

राम धन जो कि यार था अपना
बे पनाह[1] जिस से प्यार था अपना
उसके घर वालों ने मुझे आख़र
मातमी कार्ड क्यों नहीं भेजा ?
"अनख" अपनी भी चीज़ है आख़िर
मैं वहां बिन बुलाए क्यों जाऊँ ?
चाहे वह राम धन की किरया हो

राम धन चाहे यार[2] था अपना
गो बहुत उससे प्यार[3] था अपना
उसके घर वालों ने मुझे फिर भी
मातमी कार्ड क्यों नहीं भेजा ?
बिन बुलाए वहां मैं क्यों जाऊँ ?

---

1. असीम 2. सहपाठी 3. प्रियजन

आओ आगे बढ़ें

आप माने न माने हक़ीक़त[1] है यह
ज़िन्दगी इक बयाबान है, जिसमें हम
खो गए, रास्ता ढूँढते ढूँढते

–o–

राहनुमा जो थे, वह सब दग़ा[2] दे गए
राहरौ[3] भी थकावट से मजबूर हैं
सूझता ही नहीं, अब कि जाएं किधर
मँज़िलें, राह की धूल में उड़ गईं
शौक बेचारा थक हार कर मर गया

–o–

आरज़ूएं निराशाओं में खो गईं
जुस्तजू[4] को अन्धेरों ने चट कर लिया
ज़िन्दगी इक बयाबान है जिसमें हम
खो गए रास्ना ढूँढते ढूँढते

1, वास्तविकता 2. धोका 3. राही
4. तलाश

इस से पहले भी ऐसे मक़ामात[1] पर
कारवां जिन्दगी के भटकते रहे
इस से पहलें भी इन्सान तारीख़[2] में
राह के पेच-ओ-ख़म[3] से उलझते रहे

–o–

सदियों, क़िरनों[4] से ऐसे ही हालात में
वक्त की कोख से पैदा होते रहे
राम, गौतम, मुहम्मद, कृष्ण और मसीह
मारक्स-ओ-लैनिन-ओ-माओ गांधी, से लोग
जो बढ़ाते रहे मँजिलों की तर्फ़
आदमिय्यत[5] से भटके हुए कारवां

---

1. पड़ाव 2. इतिहास 3. मोड़
4 लम्बे काल से 5. मानवता

आज लेकिन मिज़ाज-ए-ज़मां[1] और है
यह ज़मीं और है आस्मां और है
अब किसी राहनुमा से तवक़्क़ुअ[2] नहीं
अब किसी राहबर पर भरोसा नहीं
अब कोई भी गुरु या कोई राहनुमा
कोई अवतार या आसमानी ख़ुदा

बज़्म-ए-हस्ती सजाने नहीं आएगा
हम को रस्ता दिखाने नहीं आएगा

शुअला-ए-इल्म[3] के पुर यक़ीं नूर से
आओ, दिल के चिराग़ों को रोशन करें
आर आगे बढ़ें, मँजिलों की तर्फ़
जो भी रस्ता है अपना वह मिल जाएगा

सिर्फ़ अज़्म-ओ-इरादा[4] की ताख़ीर[5] है
मंजिलें हम से मिलने को बेताब है
आओ आगे बढ़ें मंजिलों की तर्फ़
मंजिलों की तर्फ़, आओ, आगे बढ़ें

---

1. समय का स्वभाव 2. आशा 3. ज्ञान का प्रकाश
4. संकल्प तथा निश्चय 5. देरी

बिखरे मोती

दास्तां ना-तमाम[1] है गुल की
पत्ती पत्ती जो मुन्तशर[2] न हुई
"कँवल"

---

1. अधूरी 2. बिखरना

है मेरे ज़िहन में इस तरह तेरी याद का नक़श
किसी टहनी पे कोई फूल खिला हो जैसे

–o–

वक़त पड़ने पे .इलम होता है
कौन अपने हैं कौन बेगाने
हाथ सब्र के उन्हों ने थाम लिए
एक हम ही गये न पहचाने

–o–

फूल ही फूल गुलिस्तां में नज़र आते हैं
अपने दामन को यहां आप ने झटका होगा

–o–

फूल जैसे लोगों की फूल जैसी ज़िन्दगी
ख़ुशबूएँ ही ख़ुशबूएँ, ताज़गी ही ताज़गी

---

1. छाप

ग्रास का पंछी बे वस है
टूट चुके हैं सारे पर

–o–

क्या तुम्हारा जवाब है कोई ?
मेरे लब पर यही सवाल रहा

–o–

ग्रपनी तक़दीर के बल हम से निकाले न गये
तेरी ज़ुलफों को वहर तौर सँवारा हम ने

–o–

ग्रौरों पर मत पत्थर फैंकें
रहने वाले शीश महल के

–o–

ग्रब जाते हैं फिर ग्राएंगे
इस महफिल में रूप बदल के

अपने हीं खून से नहलाया है दिल को बरसों
फिर कहीं जा के यह होंटों पे हंसी आई है।

–o–

फिर तेरे ग़म को ज़माने से छुपाना है मुझे
मुस्कराने के लिए कोई बहाना चाहूँ

–o–

आती है मेरे ज़िहन में इस तरह उसकी याद
गिरती है जैसे फूल पे शबनम ऐ दोस्तो

–o–

फ़लस्फ़ा अक़्ल वालों का सुन-सुन के हम
मुस्कराते रहे पागलों की तरह

–o–

याद रखखो मुझे दुश्मनों की तरह
बेवफ़ाई करो दोस्तों की तरह

बख़शो है जिला[1] जिन को मेरी आंख ने अब तक
मोती वही बाज़ार में अनमोल रहे है ।

–o–

वह आईने में अपनी अदाओं पे है नाजां[2]
हम आंखों ही आंखों में उन्हें तोल रहे हैं

–o–

दूर उफ़क़[3] पर आंख लगाए इश्क के तपते सहरा में
बैठा है कोई बेचारा छांव में अपने साए की

–o–

रूह को अहसास-ए-उरयानी[4] न हो इस वास्ते
जिन्दगी को हम लिबास-ए-दर्द पहनाते रहे

–o–

एक लम्हा के लिए बैठे थे मेरे रूबरू
उम्र भर अहसास की आग़ोश[5] गरमाते रहे

---

1. चमक 2. गर्वित 3. क्षितिज
4. नंगेपन का बोध 5. गोद

हराम मेरे लिए मयकशी[1] है ए साक़ी[2] !
तेरी सुराही में गर मय नहीं सभी के लिए

–o–

दास्तां[3] ना-तमाम[4] है गुल की
पत्ती पत्ती जो मुन्तशर[5] न हुई

–o–

वहीं पहुँचेंगे अक़ल-ओ-होश वाले
अभी आए हैं दीवाने जहां से

–o–

शब-ए-फ़िराक़[6] में अक़सर तुम्हारी याद के साथ
हमारी पलकों पे तारे से झिलमिलाते हैं

–o–

शान-ए-मयख़ाना[7] बढ़ाने के लिए
होश में भी लड़खड़ाया जाएगा

---

1. शराब पीना 2. मधु बाला 3. कहानी
4. अधूरी 5. बिखरना 6. जुदाई की रात
7. मधुशाला का यश (शान)

शाम के साये जूँही ढलने लगे
रंग तेरे दर्द का गहरा हुआ

–o–

तेरी रंगत, तेरी ख़ुशबू, तेरी लय
जिस्म तेरा हर तर्फ़ बिखरा हुआ

–o–

ज़िन्दगी की इस कड़कती धूप में
मैं हूँ अपने साये में बैठा हुआ

–o–

आप को जाना है जाएँ, मेरे दिल का क्या है
दो घड़ी तड़पेगा फिर ख़ुद ही संभल जाएगा

–o–

हमारे ग़म का मदावा[1] न तुम करो हरगिज़
हम अपने ग़म को ज़माने का ग़म समझते हैं

---

1. इलाज